विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – सप्तम दिनांक -१७ -०५- २०२१

विषय -हिन्दी विषय शिक्षक -पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -३ जामुन का पेड़ कहानी के बारे में अध्ययन करेंगे।

कृष्ण चंदर की कहानी : जामुन का पेड़!

कृष्ण चंदर हिन्दी और उर्दू के कहानीकार थे। उन्हें साहित्य एवं शिक्षा क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा सन 1961 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। उन्होने मुख्यतः उर्दू में लिखा किन्तु भारत की स्वतंत्रता के बाद हिन्दी में लिखना शुरू कर दिया। इन्होंने कई कहानियाँ, उपन्यास और रेडियो व फ़िल्मी नाटक लिखे।
कृष्ण चंदर ने अपनी रचनाओं में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक विसंगतियों पर तीखा व्यंग्यात्मक प्रहार किया। उनकी कहानियां अक्सर मुहावरेदार और सजीव होती थी। उसमें व्यंग्य, विनोद और विचारों का समावेश भी उतना ही होता था।

कृष्ण चंदर का जन्म 23 नवंबर 1914 को (आज के) पाकिस्तान के वजीराबाद में हुआ था और उनका देहांत 8 मार्च 1977 को मुंबई में हुआ। उन्होंने 20 उपन्यास, 30 कहानी संकलन और दर्जनों रेडियो नाटक लिखे।

आज प्रस्तुत, उनकी कहानी 'जामुन का पेड़' एक हास्य व्यंग रचना है जिसमें उन्होंने सरकारी महकमे और उनकी कार्यशैली पर करारा व्यंग किया है!
'जामुन का पेड़' नामक इस कहानी को लिखे जाने का ठीक ठीक समय तो ज्ञात नहीं हो सका, लेकिन यदि यह उनके निधन के दस साल पहले भी लिखी गई होगी, तो इस कहानी की उम्र करीब 50 साल बैठती है। जरा सोचिए कृष्ण चंदर ने 50 साल पहले जिस लालफीताशाही को इस कहानी में बयां किया है, क्या वह आज भी वैसी की वैसी नहीं है?

जामुन का पेड़

रात को बड़े जोर का अंधड़ चला। सेक्रेटेरिएट के लॉन में जामुन का एक पेड़ गिर पडा। सुबह जब माली ने देखा तो उसे मालूम हुआ कि पेड़ के नीचे एक आदमी दबा पड़ा है।

माली दौड़ा दौड़ा चपरासी के पास गया, चपरासी दौड़ा दौड़ा क्लर्क के पास गया, क्लर्क दौड़ा दौड़ा सुपरिन्टेंडेंट के पास गया। सुपरिन्टेंडेंट दौड़ा दौड़ा बाहर लॉन में आया। मिनटों में ही गिरे हुए पेड़ के नीचे दबे आदमी के इर्द गिर्द मजमा इकट्ठा हो गया।

''बेचारा जामुन का पेड़ कितना फलदार था।'' एक क्लर्क बोला।

''इसकी जामुन कितनी रसीली होती थी।'' दूसरा क्लर्क बोला।

''मैं फलों के मौसम में झोली भरके ले जाता था। मेरे बच्चे इसकी जामुनें कितनी खुशी से खाते थे।'' तीसरे क्लर्क का यह कहते हुए गला भर आया।

''मगर यह आदमी?'' माली ने पेड़ के नीचे दबे आदमी की तरफ इशारा किया।

''हां, यह आदमी'' सुपरिन्टेंडेंट सोच में पड़ गया।

''पता नहीं जिंदा है कि मर गया।'' एक चपरासी ने पूछा।

''मर गया होगा। इतना भारी तना जिसकी पीठ पर गिरे, वह बच कैसे सकता है?'' दूसरा चपरासी बोला।

''नहीं मैं जिंदा हूं।'' दबे हुए आदमी ने बमुश्किल कराहते हुए कहा।

''जिंदा है?'' एक क्लर्क ने हैरत से कहा।